ऊंट पर प्रोड्यूसर कमलेश पाठक। ऊँट वाले के एक हाथ में डोर थी, दूसरे हाथ में ट्रांजिस्टर था। उस मरुस्थल में विविध भारती के सुर गूंज रहे थे। सुनकर हमारे भीतर से खुशी छलक छलक पड़ रही थी।

कमलेश जी ने ऊंट वाले से पूछा– 'सखी सहेली सुनते हो क्या?....

--'हां जी सुनता हूं'

--'हम विविध भारती से ही आए हैं' कमलेश जी बोलीं। उसकी आंखें थोड़ी चौड़ी हुईं।

--'ममता सिंह को जानते हो'

--'हां, उनकी आवाज तो मैं रोज़ सुनता हूं। उनका हर प्रोग्राम सुनता हूं और बहुत पसंद करता हूं। मैं ही नहीं, मेरे घर वाले भी बड़े ध्यान से उन्हें सुनते हैं।'

--'वह देखो सामने वाले ऊंट पर ममता बैठी हैं'

बस फिर क्या था। ऊंट वाले ने उस ऊँट की डोर छोड़ दी.....और 'मैडम जी' 'मैडम जी' पुकारता हुआ मेरी ओर दौड़ा।

'अरे, अरे, मुझे छोड़कर कहां जा रहे हो, इस ऊँट ने गिरा दिया तो....' कमलेश जी इतनी जोर-से चिल्लाईं कि हम सब मुड़ कर देखने लगे।

इस वाकये का जिक्र करने का मकसद इतना भर था कि विविध भारती के प्रति लोगों की किस कदर दीवानगी है। पढ़ाई के दिनों में विविध भारती के हम भी कोई कम दीवाने नहीं थे। कांता गुप्ता और बृजभूषण साहनी की पत्रावली....उनके छायागीत....बिला नाग़ा सुनते थे। जब पहली बार पत्रावली से मेरा और मेरी बहन का पत्र प्रसारित हुआ था तो हम खुशी से बल्लियों उछल पड़े थे।

....हां तो बात चल रही थी विविध भारती के स्वर्ण जयंती के कार्यक्रम की। फौजियों की पत्नियों की रिकॉर्डिंग के दौरान कुछ ऐसे मार्मिक किस्से सुनने को मिले थे कि याद करके आज भी दिल दहल जाता है। उनके पतियों की शहादत की खबर मिलने जैसी मार्मिक घटनाएं इन सब को समेट कर कई फीचर बनाकर विविध भारती से प्रसारित किए गए थे। स्वर्ण जयंती की रिकॉर्डिंग आज भी मन के पन्ने पर साफ-साफ लिखी है। जब मन चाहे तो पढ़ लेती हूं।

विविध भारती के लिए लिए गए कुछ यादगार दिलचस्प इंटरव्यू हैं। अभिनेता नाना पाटेकर से बातचीत के दौरान मैं सवालों की झड़ी लगाए हुए थी। जवाब देते-देते अचानक वह खुद ही सवालों की गुगली डालने लगे। और मेरी ही पसंद का गाना पूछने लगे। मैं तो एकदम कॉन्शस हो गई। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। अमूमन होता भी नहीं कि किसी ने इंटरव्यू लेने वाले का ही इंटरव्यू ले लिया हो। लेकिन नाना पाटेकर ने थोड़ी देर तक मेरा इंटरव्यू ले डाला। याद करके आज भी बहुत हंसी आती है।

विविध भारती के अब तक के कामकाज में सबसे खास दिन था जब विदुषी गिरिजा देवी विविध भारती के स्टूडियो में आई थीं। होठों पर बनारसी पान की लाली.....नाक में चमचमाती हीरे की लौंग। उनके सुरों के प्रकाश से पूरा स्टूडियो जगमगा गया था। उन दिनों संगीत सरिता की इंचार्ज थीं सह-केंद्र निदेशक रुपाली कुलकर्णी। उनके निर्देशन में संगीत सरिता की कई कड़ियों की लंबी रिकॉर्डिंग हुई। उन दिनों विविध भारती के केंद्र निदेशक थे श्री राजेश रेड्डी....जो बड़े ही सहज और मिलनसार थे। उनके साथ काम का अनुभव बहुत ही उम्दा रहा है।

फिलहाल बात चल रही है अप्पाजी की। अप्पा जी, यानी विदुषी गिरिजा देवी ने ठुमरी, टप्पा, खयाल गायन की तमाम बारीकियां बताईं। उन्होंने गाया तो विविध भारती का स्टूडियो सुरों से भर गया। बनारसी शैली में वह बोलीं तो हम सब मंत्रमुग्ध हो गए। संगीत सरिता कार्यक्रम में बातचीत के दौरान जब मैंने उनके गुड़ियों के शौक के बारे में भी पूछा....उस वक्त उनका चेहरा गजब खिल-खिल हो गया था। वो जैसे गुलाबी कली में तब्दील हो गईं हों।

आधी रिकॉर्डिंग के बाद अप्पा जी बोलीं–'बस अब बहुत होई गवा'। केत्ता गवइबो....? एत्ता काफी है...श्रोता लोगन बोर होई जइहैं'...

--'अप्पा जी हमका लोगन के लिए ई त सिरफ बूंद है....तनी अउर गावें.....तनिक बातचीत अउर चाही'

...रुपाली जी और हमारी इस तरह की चिरौरी के बाद तो वे खूब मूड में आ गईं....फिर तो संगीत सरिता की 12 कड़ियों की श्रृंखला रेकॉर्ड हुई.....। हालाँकि वह रुपाली जी से ही पहले से परिचित थी और उन्हीं के आमंत्रण पर आई थीं पर हम सब से खूब घुल मिलकर स्नेहिल बातें की। वह पूरा दिन मेरे स्मृति पटल पर आज भी ताजा है।

रेडियो की दुनिया जितनी चमकीली और आसान लगती है, दरअसल उतनी होती नहीं। कई बार लोग मजाक में कहते हैं–'अरे गाना बजाना भी कोई नौकरी है.....यह कोई काम है'। यह तो सिर्फ मनोरंजन है। जब हमारा मन घोर निराशा, उदासी, दर्द के बादलों से होकर गुजर रहा होता है, ठीक उसी वक्त हम हंसते-खिलखिलाते ध्वनि तरंगों पर सवार होकर औरों के दुखों पर फाहा लगा रहे होते हैं। अपनी सारी तकलीफें, सारे जज्बात स्टूडियो के बाहर फेंक कर ही माइक्रोफोन के सामने बैठते हैं। सफल उद्घोषक वही है जिसके निजी भावों की कोई श्रोता थाह ना पा सके।

कई बार ऐसा हुआ जब मेरा बच्चा जादू छोटा था, सुबह की ड्यूटी होती थी। सुबह 5-30 बजे ऑफिस पहुंचना होता था। ऑफिस की गाड़ी अलसुबह आ जाती थी। अलार्म बजा नहीं कि जादू उठ कर बैठ जाता था। उसके गला फाड़ कर रोने की आवाज बिल्डिंग के कई फ्लोर तक जाती। बच्चों को पता हो कि मां जल्दी में है, तो वह और ज्यादा ऊर्जा से रोते हैं। वह इतनी कसकर मुझसे चिपक जाता कि अलग करना मुश्किल होता। यूनुस जी उसे खींचकर अपने गोद में लेते और मैं झट से दरवाजे के बाहर.....। इतनी सुबह दुलराने- लाड़ करने का भी वक्त नहीं होता था। बस उसकी चीख़ मेरे कानों में गूंजती रहती.....। मेरी आंखों में उमड़े बादल बूंद-बूंद झरते रहते।